सबको जमीन नहीं मिलेगी, दस्तकारी नहीं मिलेगी, और गाँव का जिम्मा गाँववाले ही नहीं उठायेंगे।

माखन खाते जाना, सूत कात हरषाना

आज जुलाहे, बुनकर मिलने आये थे। हमने उनके घर जाने का वादा किया था। उनके हाथों में बुनने का फन है। उन्होंने कहा कि हमारा बुनने का उद्योग चलना चाहिए। हमने कहा, आपको रोजी मिलनी चाहिए, बुनने का काम मिलना चाहिए। यह तब मिल सकता है, जब कि उनको यहाँ काता हुआ सूत मिले। गाँव का कपड़ा गाँव में बनना चाहिए और गाँव में ही उसका इस्तेमाल होना चाहिए। गाँव में गाय है तो दूध, मक्खन आपको खाना चाहिए, बच्चों को खिलाना चाहिए। दूध, मक्खन बेचने की चीज नहीं है। बच्चों को ऐसी चीजें खाने को मिलेंगी तो बच्चे मजबूत बनेंगे। अच्छे सिपाही, अच्छे कारकून बनेंगे। दूध, मक्खन खाने को न मिला तो वे कमजोर बनेंगे। बैल कमजोर होंगे तो किसान का नुकसान होगा। फसल कम होगी। लेकिन बच्चे कमजोर बनेंगे तो देश ही कमजोर बनेगा। इसलिए हमें मक्खन खाना चाहिए, बच्चों को खिलाना चाहिए। फिर हम गायेंगे 'माखन खाते जाना, सूत कात हरषाना'। आज बच्चे सूखी रोटी खाते हैं। कभी-कभी रोटी के साथ दाल, मिरची भी मिल जाती है। यह ठीक नहीं है, इन्हें खूब घी-दूध मिलना चाहिए। ये (नानकचन्द मेहता) हमारे पिताजी हैं। इनकी उम्र ९२ साल है। इतनी उम्र होते हुए भी तगड़े हैं, काम करते हैं। इनसे हमने पूछा कि आपके जिस्म में इतनी ताकत कहाँसे आयी? इन्होंने बताया: (१) मैं दूध पीता हूँ। (२) नशाखोरी नहीं करता हूँ और (३) मेरी नीयत अच्छी है। ये तीन चीजें हम जिन्दगी में लायें तो हमारी जिन्दगी लम्बी होगी। भगवान ने हमारे लिए जो जिन्दगी रखी है, वह हम पूरी जीयेंगे।

गाँव का ग्रामदान करें, एक कुनबा बनायें, रोजमर्रा की चीजें गाँव में ही तैयार कर लें तो हमारी जिन्दगी में सुख आयेगा। फिर पाकिस्तान से और लोग अगर यहाँ आयेंगे तो उन्हें भी कहेंगे कि तुम भी हमारे ग्रामदान में शामिल हो जाओ। अगर हम ग्रामदान का रास्ता लें तो इस तरह से आगे आनेवाली मुसीबतें भी हल हो सकती हैं। आज बाहर से कपड़ा वगैरह खरीदते हैं। वह अच्छा लगता है। लेकिन उसीके कारण बच्चों को मक्खन नहीं मिलता है। जमीन सबके लिए और काम भी सबके लिए है, ऐसा होना चाहिए। तालीम, इल्म मिलना चाहिए और काम करने की शोहरत भी होनी चाहिए। इसके लिए ग्रामदान के सिवाय दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

इन्सान कायम के लिए अच्छा है

आज एक बूढ़े मुसलमान भाई हमसे मिले। उन्होंने हमारे सामने सिर झुकाया और लगे रोने। वे बहुत रोये। उनका एक बेटा मर गया और दूसरा पाकिस्तान में रह गया। ऐसे सारे किस्से सुनकर हमारा दिल भी रोने लगता है। हमने कैसी फिजा बनायी है। किसीके बेटे छूट गये, किसीके भाई। जब मुल्क के दो हिस्से हुए थे, तब काफी झगड़े थे। लड़कियाँ इधर से उधर और उधर से इधर भगायी गयी थीं। हिन्दू, सिख, मुसलमान—सबने उस वक्त खराब काम किये थे। खराब हवा आयी थी। अब वह हवा नहीं रही है। यह परमात्मा की कृपा है। खराब हवा आती है और जाती है। वह कायम नहीं रहती है। इन्सान कायम के लिए अच्छा ही है। वे बूढ़े भाई हमसे पूछ रहे थे कि क्या हमारे बेटे से हम मिल सकते हैं? हमने कहा, आप वहाँ जा सकते हैं। असल में वहाँ जाने में कोई रुकावट नहीं आनी चाहिए। अपने इस देश की दस हजार साल की तवारीख है। उतने में सैकड़ों राजा, महाराजा और बादशाह आये, गये। पर यह कश्मीर कायम है। जैसे ये नदियाँ झेलम, चिनाब, सिन्धु आदि और ये पहाड़ कायम हैं और लोग भी जैसे के तैसे कायम हैं। कायम की चीजें परमात्मा की, खुदा की हैं। जो चीजें कायम नहीं रहतीं, वे फानी हैं। यह दुनिया फानी है। फना होनेवाली है। इस फना होनेवाली दुनिया में 'यह मेरा बेटा है और यह पराया है,' ऐसा भेद करके नहीं देखना चाहिए। हम सभी खुदा की, परमात्मा की सन्तान हैं, इस तरह से देखेंगे तो सबपर बराबर प्यार रहेगा। हमेशा भगवान को याद करें, झूठ न बोलें, सचाई पर चलें, ईमान रखें। अपने लिए अलग-अलग न सोचें। मेरा मैं देखूँगा—यह खयाल न रखें। हम सब अपना मिलकर सोचें, मिलकर देखें, मिलकर काम करें। कोई चीज मेरी नहीं, सभी हमारी हैं। इस तरह 'मेरा' छोड़ें और 'हमारा' सोचें।

हम छोटे व्यापारी हैं

हम तो आपके खिदमतगार हैं। यहाँ आपको भगवान का पैगाम सुनाने आये हैं। सभी जगह यह पैगाम पहुँचाने के लिए ही हम पैदल-पैदल घूम रहे हैं। हमारा कौल 'जय-जगत्' है। हम सारे जगत् की जय चाहते हैं। आज तो लोग चाहते हैं कि हमारी फतह हो और हमारे दुश्मन की हार हो। दो पक्षों में लड़ाई होती है। तो दोनों ओर की फौजें अल्लामियाँ से यह दुआ माँगती हैं: "हमारी फतह हो"—एक की हार में दूसरे की जीत है। लेकिन हम सबकी जीत चाहते हैं। मेरी जय, तेरी जय, उनकी जय, सबकी जय हो, सबकी फतह हो। सबकी फतह में किसीकी भी हार नहीं है। परमात्मा हमें यही नसीहत देता है और यही नसीहत हमें नबी, पैगम्बर और सन्तों ने दी है। यह नसीहत पुरानी है। इसी नसीहत को पहुँचाने हम आपके पास आये हैं। जैसे छोटे व्यापारी बड़े व्यापारी से माल लेते हैं और बेचते हैं, वैसे ही बड़े-बड़े महान् नबी, रसूल, साधु और सन्तों के पास जो माल पड़ा है, वही लेकर हम गाँव-गाँव में आपके पास पहुँचाते हैं। ◆◆◆

अनुक्रम

१. एक-दूसरे का शोषण करके कब तक पोषण...
पूँछ १ जुलाई '५९ पृष्ठ ७६३
२. दूध पीजिये! नशा छोड़िये!! नीयत ठीक रखिये!!!
बगनोटी १९ जून ५९ ,, ७६५

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन: १३९१ तार: 'सर्व-सेवा' वाराणसी